अध्याय 27

दो कहानियाँ: मीरास और नेतृत्व

गिनती 27-30 में दिए गए नियमों ने यह अर्थ प्रदान किया कि इस्राएल कनान पर जीत प्राप्त कर लेगा और वहाँ पर समृद्ध हो जाएगा। चालीस वर्ष पूर्व आरम्भ की गई यात्रा की पूर्णता ने यह माँग रखी कि भूमि के वितरण पर शासन करने के लिए मीरास की व्यवस्था स्थापित की जाए। निकट की जीत ने यह भी आज्ञा दी कि मूसा के एक उत्तराधिकारी का चुनाव किया जाए क्योंकि वह अपने पाप के कारण कनान में प्रवेश नहीं कर पाया था।

यह अध्याय इस बात पर ध्यान केन्द्रित करता है कि किस प्रकार ये दो आवश्यकताएँ पूरी की गई। पहला, यह इस प्रश्न का उत्तर देता है कि अगर किसी पिता के कोई पुत्र नहीं हो तो उसकी पुत्रियों को अपने पिता की सम्पत्ति में से मीरास प्राप्त होगी या नहीं। सलापहद की पुत्रियों ने कनान में एक मीरास पानी चाही और परमेश्वर ने अपना प्रत्युत्तर दिया (27:1-11)। दूसरा, यह बताता है कि किस प्रकार मूसा ने वायदे के देश को देखा परन्तु उसमें प्रवेश किए बिना ही मर गया और लोगों को उस देश में लेकर जाने के लिए किस प्रकार परमेश्वर ने यहोशू को नियुक्त किया (27:12-23)।

उत्तराधिकार विधि (27:1-11)

[1]तब यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में से सलोफाद, जो हेपेर का पुत्र और गिलाद का पोता और मनश्शे के पुत्र माकीर का परपोता था, उसकी बेटियाँ जिनके नाम महला, नोवा, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा हैं वे पास आईं। [2]और वे मूसा और एलीआज़ार याजक और प्रधानों और सारी मण्डली के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ी होकर कहने लगीं, [3]"हमारा पिता जंगल में मर गया; परन्तु वह उस मण्डली में का न था जो कोरह की मण्डली के संग होकर यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी हुई थी, वह अपने ही पाप के कारण मरा; और उसके कोई पुत्र न था। [4]तो हमारे पिता का नाम उसके कुल में से पुत्र न होने के कारण क्यों मिट जाए? हमारे चाचाओं के बीच हमें भी कुछ भूमि निज भाग करके दे।" [5]उनकी यह विनती मूसा ने यहोवा को सुनाई। [6]यहोवा ने मूसा से कहा, [7]"सलोफाद की बेटियाँ ठीक कहती हैं; इसलिये तू उनके चाचाओं के बीच उनको भी अवश्य ही कुछ भूमि निज भाग करके दे, अर्थात् उनके पिता का भाग उनके हाथ सौंप दे।

[8]और इस्राएलियों से यह कह, 'यदि कोई मनुष्य निपुत्र मर जाए, तो उसका भाग उसकी बेटी के हाथ सौंपना। [9]और यदि उसके कोई बेटी भी न हो, तो उसका भाग उसके भाइयों को देना। [10]और यदि उसके भाई भी न हों, तो उसका भाग उसके चाचाओं को देना। [11]और यदि उसके चाचा भी न हों, तो उसके कुल में से उसका जो कुटुम्बी सबसे समीप हो उनको उसका भाग देना कि वह उसका अधिकारी हो। इस्राएलियों के लिये यह न्याय की विधि ठहरेगी, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी।'"

आयतें 1-3. सलोफाद की पाँच पुत्रियाँ - **महला, नोवा, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा - मूसा** (और **प्रधानों और सारी मण्डली**) के सामने एक समस्या लेकर आईं। वे **मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ी** हुईं, जो जमा होने का सार्वजनिक स्थान था (10:3; 12:5; 16:18, 19, 50; 20:6)। यहाँ उन्होंने अपनी परिस्थिति का विवरण प्रस्तुत किया: उनका **पिता जंगल में मर गया; परन्तु वह उस मण्डली में का न था जो कोरह की मण्डली के संग होकर यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी हुई थी ...** टी. कार्सन का मानना है कि पुत्रियाँ यह कह रहीं थीं कि चूंकि उनका पिता कोरह की मण्डली के विद्रोह में शामिल नहीं था, "तो उनके सन्तानों पर ईश्वरीय दण्ड आने का कोई कारण नहीं है (तुलना करें 16:32, 33; निर्गमन 20:5)."[1]

उन्होंने आगे यह भी कहा कि **वह अपने ही पाप के कारण मरा; और उसके कोई पुत्र न था**। वह उस पीढ़ी का एक भाग था जिन्होंने भेदियों की सूचना सुनकर कनान में प्रवेश करने से इनकार किया था (अध्याय 13; 14)। वह पाप का दोषी था, लेकिन खुले विद्रोह का नहीं। इस वाक्यांश का यह तात्पर्य है कि यदि वह कोरह के मण्डली के संग होता, तो उसको भूमि के निज भाग से हाथ धोना पड़ता (1 राजा 21:1-16 में वर्णित नाबोत की दाख की बारी के मामले से तुलना करें)।

आयत 4. यदि सलोफाद की पुत्रियों को भूमि का निज भाग, जो उनके पिता को मिला होता, के उत्तराधिकारी नहीं होते हैं, तब उनके **पिता का नाम उसके कुल में से पुत्र न होने के कारण मिट गया होता**। इसलिए उन्होंने यह मांगा कि अपने **चाचाओं** के संग, उनको भी **भूमि का निज भाग** मिले - भूमि का वह निज भाग जो उनके पिता को मिला होता। ये पुत्रियाँ उस भूमि के प्रति इतनी चिंतित क्यों थीं जिसको इस्राएलियों ने अभी तक अपने अधिकार में नहीं किया था? इसका ध्यान आकर्षित करने वाला एक उत्तर यह है कि वे मनश्शे के वंश के लोग थे और इस गोत्र के आधे लोग यरदन के पूर्व के देश में बस गए थे जिसको इस्राएलियों ने उस समय अपने अधिकार में कर लिया था जब ये पुत्रियाँ मूसा के पास आईं थी। यद्यपि, इस अनुच्छेद के वाक्यांश से ऐसा प्रतीत होता है कि पुत्रियां भविष्य में निज भूमि की बंटवारे की अपेक्षा कर रहीं थीं। वे इस बात को सुनिश्चित कर रहीं थीं कि जब निज भूमि गोत्रों में बांटी जाए,[2] तो कहीं ऐसा न हो कि "पुत्र न होने" कारण उनके पिता के परिवार को भूमि से वंचित रहना पड़े।

आयतें 5-7. मूसा ने इस परिवार की चिंताओं को ध्यान से सुनते हुए, उनके साथ सम्मान जनक तरीके से व्यवहार किया। इससे पहले इस विषय पर मूसा को

परमेश्वर से कोई विधि नहीं मिली थी, इसलिए **उनकी यह विनती मूसा ने यहोवा को सुनाया**। परमेश्वर पुत्रियों के निवेदन से सहमत हुए। मूसा को बताया गया कि जो कुछ उन्होंने कहा वह ठीक था। इसलिए, उसको यह निर्देश दिया गया कि **तू उनके चाचाओं के बीच उनको भी अवश्य ही कुछ भूमि निज भाग करके दे, अर्थात् उनके पिता का भाग उनके हाथ सौंप दे**।

पुत्रियों के निवेदन के प्रति परमेश्वर का प्रत्युत्तर बलहीनों, जैसे अनाथों व विधवाओं के प्रति उसकी चिंता का एक और उदाहरण है। उसने यह सुनिश्चित किया कि इन पाँच महिलाओं की आवश्यकता - और उनके समान अन्य लोगों की - आवश्यकताएं पूरी की जाए। यह अलग बात है कि इन महिलाओं को अपनी रखरखाव के लिए, खेतों में काम करना था।[3]

आयतें 8-11. परमेश्वर ने मूसा को विधि में कुछ और बदलाव करने के निर्देश दिए। जो विधि दी गई थी वह इस बात का विश्लेषण करती है कि एक व्यक्ति का उत्तराधिकार कौन हो सकता है:

1. यदि उसके पुत्र है (हैं), तो उसकी भूमि का निज भाग उसको (उनको) दिया जाना चाहिए था (देखें व्यव. 21:15-17)। इस विधि के अनुसार उसकी पत्नी उसके मरने के पश्चात उसकी भूमि के निज भाग की उत्तराधिकारी नहीं हो सकती थी। परमेश्वर ने विधवाओं की देखभाल के लिए दूसरा उपाय किया था।
2. यदि उसके **पुत्र नहीं** थे … तो **उसकी सम्पत्ति उसकी पुत्रियों को** मिलनी चाहिए थी (27:8)।
3. **यदि उसकी पुत्रियां भी नहीं थीं**, तो उसके भूमि का निज भाग उसके भाइयों को दिया जाना चाहिए था (27:9)।
4. **यदि उसके भाई भी नहीं थे**, तो उसके भूमि का निज भाग **उसके पिता के भाइयों** अर्थात् उसके चाचा या ताऊ को दिया जाना चाहिए था (27:10)।
5. यदि उसके पिता के भी भाई नहीं थे, … तो उसकी सम्पत्ति उसके कुटुम्बी के निकटतम सम्बन्धी को दी जानी चाहिए थी (27:11)।

इस्राएलियों के लिए यह न्याय की विधि ठहरेगी, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी (27:11)। यहोशू 17:3-6 का अभिलेख यह बताता है कि इन पुत्रियों को उनके निवेदन के अनुसार भूमि का निज भाग मिला।

जबकि यह पाठ विधवाओं के लिए कोई प्रावधान नहीं बताता है, लेकिन इस्राएलियों को उनकी देखभाल करने के लिए अन्य विधियां दी गई थी (निर्गमन 22:22; व्यव. 14:28, 29; 24:17-22; 26:12, 13; 27:19)। विधवाओं की देखभाल करने का एक तरीका "नियोगी विवाह" ("levirate marriage") का अभ्यास था। अंग्रेजी शब्द "levirate," लातिनी भाषा के *levir* शब्द से उद्धृत है, जिसका अर्थ "देवर" है। यह एक प्राचीन प्रथा थी कि जब कोई व्यक्ति मर जाता था

तो उसका निकटतम कुटुम्बी, जैसे देवर इत्यादि को उसकी विधवा से विवाह करके उसके लिए बच्चे उत्पन्न करना था। इस प्रकार, मृतक का नाम भी नहीं मिटेगा और उस विधवा की आवश्यकता की भी पूर्ति हो जाएगी। यह प्रथा बाप दादों के समय से विद्यमान थी, तामार की कथा इसकी पृष्ठभूमि का कार्य करती है (उत्पत्ति 38:6-26)। कालांतर में, जब परमेश्वर ने मूसा पर अपनी विधि प्रगट की, तो उसमें नियोगी विवाह सम्मिलित किया गया (व्यव. 25:5-10)। यह विधि रूत की कहानी का केन्द्र बिंदु है (रूत 3:1-4:10)। यह सदूकियों के प्रश्न की पृष्ठभूमि भी है जिसे उन्होंने यीशु से उस स्त्री के बारे में पूछा था जिसका विवाह सात भाइयों से हुआ था (मत्ती 22:23-33)।

मूसा का उत्तराधिकारी (27:12-23)

12फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "इस अबारीम नामक पर्वत के ऊपर चढ़के उस देश को देख ले जिसे मैं ने इस्राएलियों को दिया है। 13और जब तू उसको देख लेगा, तब अपने भाई हारून के समान तू भी अपने लोगों में जा मिलेगा, 14क्योंकि सीन नामक जंगल में तुम दोनों ने मण्डली के झगड़ने के समय मेरी आज्ञा को तोड़कर मुझ से बलवा किया, और मुझे सोते के पास उनकी दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया।" (यह मरीबा नामक सोता है जो सीन नामक जंगल के कादेश में है)। 15मूसा ने यहोवा से कहा, 16"यहोवा, जो सारे प्राणियों की आत्माओं का परमेश्वर है, वह इस मण्डली के लोगों के ऊपर किसी पुरुष को नियुक्त कर दे, 17जो उसके सामने आया जाया करे, और उनका निकालने और पैठानेवाला हो; जिससे यहोवा की मण्डली बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान न रहे।" 18यहोवा ने मूसा से कहा, "तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख; वह ऐसा पुरुष है जिसमें मेरा आत्मा बसा है; 19और उसको एलीआज़ार याजक के और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके उनके सामने उसे आज्ञा दे। 20और अपनी महिमा में से कुछ उसे दे, जिससे इस्राएलियों की सारी मण्डली उसकी माना करे। 21और वह एलीआज़ार याजक के सामने खड़ा हुआ करे, और एलीआज़ार उसके लिये यहोवा से ऊरीम की आज्ञा पूछा करे; और वह इस्राएलियों की सारी मण्डली समेत उसके कहने से जाया करे और उसी के कहने से लौट भी आया करे।" 22यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने यहोशू को लेकर, एलीआज़ार याजक और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके, 23उस पर हाथ रखे, और उसको आज्ञा दी जैसा कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा था।

इस अध्याय के दूसरे भाग में, "उत्तराधिकारी" के एक अन्य प्रश्न पर निर्णय किया गया है। परमेश्वर ने इस बात का निर्णय कर लिया था कि मूसा की मृत्यु के पश्चात उसका स्थान कौन ग्रहण करेगा। उत्तराधिकारी का प्रश्न इसलिए उठाया गया था क्योंकि परमेश्वर ने इस बात की घोषणा कर दी थी कि जल्दी ही मूसा की मृत्यु होने वाली थी।

आयत 12. परमेश्वर ने **मूसा** को निर्देश दिया, **"अबारीम नामक पर्वत के ऊपर चढ़के उस देश को देख ले।"** "अबारीम" वह पर्वत श्रृंखला थी जो मृत सागर के उत्तरी-पूर्वी दिशा में स्थित थी। जिस स्थान से मूसा ने कनान को देखा वह नेबो पहाड़ था (व्यव. 34:1)। यह "यरीहो के विपरीत अबारीम पहाड़ की एक चोटी थी [गिनती 33:47; व्यव. 32:49]; इसके निकट पिसगा की चोटी था [व्यव. 34:1]।"[4]

आयत 13. परमेश्वर ने मूसा को चेतावनी दी कि वह **भी अपने भाई हारून के समान ... अपने लोगों में जा मिलेगा** (20:23-28)। मूसा को उस देश को देखने की अनुमति मिली जिसे परमेश्वर इस्राएलियों को देने वाला था, लेकिन उसके पश्चात वह मर जाएगा (व्यव. 3:27; 32:48-52)।

आयत 14. परमेश्वर ने मूसा को स्मरण दिलाया कि वह उस देश को देखेगा लेकिन उसमें क्यों प्रवेश नहीं करेगा: **सीन** के **जंगल** में उसने परमेश्वर से **बलवा किया** था, और **मरीबा नामक सोता, जो कादेश में है**, उसने वहाँ (लोगों) की **दृष्टि में** उसे **पवित्र** नहीं ठहराया था (20:2-13)।

मूसा ने यहोवा से गिड़गिड़ाकर विनती की वह उसे "पार जाने दे कि यरदन पार के उस उत्तम देश को देखे," परंतु उसने उसकी नहीं सुनी (व्यव. 3:23-26)। गिनती 20:12 में, परमेश्वर ने ठाना कि मूसा उस देश में प्रवेश करने न पाएगा, और वह अपना मन नहीं बदलेगा। व्यवस्थाविवरण 34:1 में मूसा का परमेश्वर के निर्देशों की आज्ञा मानने का अभिलेख प्रस्तुत किया गया है कि वह जाएगा और उस देश को देखेगा। "यहोवा ने उसे सारा देश दिखा दिया," और वह "मोआब देश में मर गया" (व्यव. 34:1, 5)।

आयतें 15-17. जब मूसा को उसकी मृत्यु के बारे में बताया गया, तो उसने यहोवा, जिसे उसने **सब प्राणियों के आत्माओं के परमेश्वर** करके सम्बोधित किया था (देखें 16:22) से निवेदन किया कि वह **लोगों पर उसके उत्तराधिकारी के रूप में किसी पुरुष को नियुक्त करे**। उनको किसी की आवश्यकता थी जो उनकी अगुवाई करे और उनकी देखभाल करे **जिससे यहोवा की मण्डली बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान न रहे**। यह अभिव्यक्ति "भटके हुए, असहाय, और पराजित लोगों के लिए प्रयोग किया गया एक अलंकार है।"[5] कभी-कभी यह सेनानायक रहित सेना को भी संबोधित करता है (1 राजा. 22:17; 2 इतिहास 18:16)। इसके अलावा, वाक्यांश **आया जाया करे**, का तात्पर्य युद्ध के लिए निकलना और जब युद्ध समाप्त हो जाए तो वापस लौटने को भी संदर्भित करता है (यहोशू 14:11; 1 शमूएल 18:13, 16)। इस संदर्भ में, यह भाषा यह सुझाव प्रस्तुत करती है कि एक अगुवे की आवश्यकता है, जो इस्राएलियों की कनान देश की विजय गाथा में अगुवाई करे।

आयतें 18, 19. परमेश्वर ने विनती मान ली और उसने मूसा को **नून के पुत्र यहोशू** को नियुक्त करने के लिए कहा। यहोशू न्यायसंगत पसंद था। वह "जवानी से ही मूसा का सेवक था" (11:28; देखें निर्गमन 33:11)। उसने अमालेकियों के विरूद्ध इस्राएली सेना की अगुवाई की थी और सीनै पहाड़ पर व्यवस्था लेने के

लिए मूसा के संग गया था (निर्गमन 17:9, 10; 24:13; 32:17)। मूसा के "सेवक" के रूप में उसको संबोधित किया गया है (यहोशू 1:1), वह बारह भेदियों में से एक था जिन्होंने कनान देश का भेद लिया था (13:8, 16)। कालेब के संग, उसने बहुमत वादियों की "बुरी सूचना" का खण्डन किया था (14:6-9)। परिणामस्वरूप, उस पीढ़ी के केवल ये दो पुरुष ही प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश कर रहे थे (26:65)।

मूसा के उत्तराधिकारी को नामित करने में, परमेश्वर ने पहले यहोशू की योग्यता के बारे में कहा। वह ऐसा पुरुष **था जिसमें परमेश्वर का आत्मा बसा था**। आयत 18 में वर्णित "आत्मा" (רוּחַ, *रूवाह्)* का अर्थ "अगुवेपन की आत्मा" हो सकता है - परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करने या कार्य करने के लिए परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया एक विशिष्ट गुण। यदि इसका यही अर्थ है तो इस शब्द के प्रथम अक्षर को अंग्रेजी भाषा के बड़े अक्षर में नहीं लिखा जाना चाहिए। दूसरी संभावना यह है कि "आत्मा" का अर्थ "परमेश्वर का आत्मा" अर्थात् पवित्र आत्मा है। यदि यही इसका अर्थ है तब अंग्रेजी भाषा में इसके प्रथम अक्षर को बड़े अक्षर में लिखा जाना चाहिए। कैसे भी हो, "आत्मा" का स्रोत परमेश्वर था जिसने यहोशू को मूसा का उत्तराधिकारी होने के योग्य ठहराया।[6]

अगुवेपन की पदवी प्रदान करने के लिए मूसा को यहोशू पर [अपना] **हाथ रखने** के लिए कहा गया (देखें 8:10; प्रेरितों. 6:6; 13:3)। इसके साथ ही, उसको यहोशू को **एलीआज़ार याजक के और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके उनके सामने उसे आज्ञा** देने के लिए कहा गया। "आज्ञा देने" (צָוָה, *त्सावा)* के लिए इब्रानी शब्द का अनुवाद "आज्ञा देना" ("charge" [KJV]) या "आदेश देना" ("give … orders" [NJB]) किया जा सकता है।

आयत 20. अपना हाथ यहोशू पर रखने के द्वारा और सार्वजनिक रूप से उसे इस्राएल का अगला अगुवा नियुक्त करने के द्वारा, मूसा **अपनी महिमा में से कुछ** उसको प्रदान कर रहा था। व्यवस्थाविवरण 34:9 कहता है कि जब मूसा ने अपना हाथ यहोशू पर रखा, तो उसने "बुद्धि की आत्मा" भी उसको प्रदान की। इस नियुक्ति के द्वारा, **इस्राएल की सारी मण्डली** को यहोशू की **आज्ञा मानने** के लिए कहा गया।

आयत 21. यद्यपि, यहोशू की भूमिका मूसा के समान नहीं थी। सीधा परमेश्वर से दिशा निर्देशन प्राप्त करने के बजाए, यहोशू को **ऊरीम** (और तुम्मीम), जिसे [महा] **याजक एलीआज़ार** प्रयोग करता था, के द्वारा दिशा निर्देशित किया जाएगा।

ऊरीम और तुम्मीम दो छोटे पत्थर थे जो महायाजक के हृदय के वस्त्र पर रहते थे (निर्गमन 28:30)। जब यहोवा से कुछ **पूछने** के लिए महायाजक इसका प्रयोग करता था, तो वे इस्राएल के अगुवों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का ईश्वरीय **संस्तुति** ("हाँ," "नहीं," या "उदासीन") प्रगट करते थे।[7] आर. के. हैरीसन ने इंगित किया कि ऊरीम (אוּרִים) और तुम्मीम (תֻּמִּים) शब्द इब्रानी वर्णमाला के अक्षर आलेफ (א) और टाउ (ת) से आरंभ होते हैं। उनका सुझाव था कि ये विस्तरण है जिसमें प्रतिकूल पूर्णता का द्योतक है, जैसे यूनानी भाषा के वर्णमाला में "अल्फा और ओमेगा" (प्रका. 1:8; 21:6; 22:13)। यदि ऐसी बात है, तो ऊरीम और तुम्मीम को "प्रकाशन में पूर्ण सच्चाई" समझा जाना चाहिए।[8]

यहोशू को महायाजक के सामने परमेश्वर का उत्तर जानने के लिए **खड़ा होना** था। **इस्राएलियों** को उसके निर्देशों का पालन करना चाहिए थाः **उसके कहने से जाया करे और उसी के कहने से लौट भी आया करे।** यह भाषा इस्राएलियों को युद्ध के लिए परमेश्वर की दिशा निर्देश की ओर संकेत करता है (27:15-17 की टिप्पणी देखें)।

आयतें 22, 23. यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने काम किया। पाठ आगे यह भी कहता है कि मूसा ने **यहोशू को, एलीआज़ार याजक और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके, उस पर हाथ रखा, और उसको आज्ञा दी ...** । जैसे एलीआज़ार ने हारून को महायाजक के रूप में प्रतिस्थापन्न किया (22:23-28), वैसे ही यहोशू भी मूसा को इस्राएल के अगुवे के रूप में प्रतिस्थापन्न करेगा।

वाक्यांश **यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार** भावात्मक वाक्यांश है जो निर्गमन की पुस्तक के अंतिम अध्यायों और गिनती की पुस्तक के प्रथम दस अध्यायों में बहुधा पाया जाता है, लेकिन गिनती 10:13 के बाद इस वाक्यांश (या ऐसे शब्दों) का यह प्रथम प्रकटीकरण है। संभवतः इस अभिव्यक्ति का प्रयोग इस ओर संकेत करता है कि इस्राएली लोग अधर्म से आज्ञाकारिता की ओर लौट आए हैं। नई पीढ़ी के लोगों का विश्वास पिछली पीढ़ी के लोगों के विश्वास से न केवल दृढ़ था, बल्कि उन्होंने पूर्ण आज्ञाकारिता दिखाई। मूसा की मृत्यु तक यहोशू, उसके अधिकार का अभिन्न अंग बना रहा, और उसके पश्चात वह इस्राएल का निर्विरोध अगुवा बना (व्यव. 34:5, 9; यहोशू 1:1, 2)।

परमेश्वर ने पहले मूसा और उसके पश्चात यहोशू को, अपने लोगों के लिए ईश्वर का भय मानने वाला अगुवा नियुक्त किया। दोनों के अपने अलग-अलग गुण और परमेश्वर द्वारा दिए गए कर्तव्य थे। कनान विजय के लिए यहोशू आदर्श साहसी अगुवा था।

अनुप्रयोग

"आगे बढ़ाना" (अध्याय 27)

अगुवों को जवान पीढ़ी तक अगुवेपन की जिम्मेदारी हस्तांतरण की महत्वत्ता समझना चाहिए। जिस तरह मूसा से यहोशू तक अधिकार का हस्तांतरण किया गया, और जिस तरह यीशु ने प्रेरितों को, जो कार्य उसने आरंभ किया था, जारी रखने का आदेश दिया, उसी तरह कलीसिया के अगुवों को, जब वे सेवा में दूसरे क्षेत्र की ओर बढ़ जाएं, सेवानिवृत हो जाएं, या मसीह में सो जाएं तो उनके प्रतिस्थापन्न के लिए उनको लोगों की पहचान कर लेनी चाहिए। पौलुस ने तीमुथियुस को उन बातों को दूसरों को सिखाने के लिए कहा जो उसने उसको सिखाई थी ताकि वे भी दूसरों को सिखाएं (2 तीमु. 2:2)। प्रभु की कलीसिया के कार्य को बढ़ाने के लिए चुने गए लोगों को, यहोशू के समान (और प्रेरितों 6:3 के लोगों के समान) "आत्मा से भरा होना" चाहिए - पवित्र आत्मा से प्रभावित या पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित, और परमेश्वर द्वारा प्रदत्त अगुवेपन की क्षमता प्राप्त

लोग। एक बार जब चुन लिए जाएं, तो इन व्यक्तियों का, उनकी उपस्थिति में, जिनकी उनको अगुवाई करनी है, आदेश और कार्य करने के लिए अभिषेक किया जाना चाहिए।

गिनती 27 (27:1-11) में निज भाग संबंधी विधि

गिनती 27:1-11 की निज भाग संबंधी विधि तीन तथ्यों को परिचित करती है जिस पर विचार किया जाना चाहिए।

यह महिलाओं के अधिकार के बारे में नहीं थी। सलोफाद की पुत्रियों का वृतांत और उनके निज भाग की मांग पूर्णतया या प्राथमिक रूप से महिलाओं के अधिकार के बारे में नहीं है। पुत्रियों ने जिस बात को अभिव्यक्त किया था वह उनको लाभ पहुँचाने के लिए नहीं था बल्कि वह उनके पिता के सम्मान के लिए था। वे नहीं चाहते थे कि इस्राएलियों के बीच से उनके पिता का नाम हटाया जाए।

यह घटना यह प्रकट करती है कि व्यवस्था के अंतर्गत स्त्रियों की देखभाल कैसे की जानी थी। यदि किसी महिला के भाई थे, तो उसको उसके पिता का निज भाग नहीं मिलता था। यद्यपि, जब उसका विवाह हो जाता था तो उस पितृसत्तात्मक समाज में (उस समाज में जिसकी वंशावली पिता के परिवार से जानी जाती है), वह अपने पति के परिवार का भाग हो जाती थी और उसकी देखभाल उसके पति के द्वारा की जाती थी। परिणामस्वरूप, उसको उसके पति के निज भाग का लाभ मिलता था और उसकी संतान उसके पति के निज भाग की उत्तराधिकारी होती थी। उसका पिता उसको दहेज भी देता था जो वह अपने साथ अपने पति के घर ले जाती थी।[9] यदि उसके कोई भाई नहीं थे, सलोफाद की पुत्रियों के मामले में जो निर्णय लिया गया था वह यह है कि उनको उनके पिता के निज भाग का हिस्सा मिलेगा। (कालांतर में इस विधि का समायोजन अध्याय 36 में किया गया था।) विधि में इस परिवर्तन का एक परिणाम यह हुआ कि इस्राएल देश में महिलाएं भी उत्तराधिकारी के रूप में भूमि प्राप्त कर सकतीं थीं और उस पर मालिकाना अधिकार जता सकतीं थीं।[10]

संभवतः सलोफाद की पुत्रियों के निवेदन की सबसे रोचक बात यह थी कि वे "सामने आईं": उनको मूसा और एलीआज़ार के निकट आने की अनुमति मिली और "प्रधानों और सारी मण्डली के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर" आने की अनुमति मिली (27:1, 2)। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि उन्होंने पहले इस मामले को "निचली न्यायालयों" में चुनौती दी थी लेकिन वहाँ से उन्हें कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला था (देखें निर्गमन 18:21-26)। इस अनुच्छेद में, "मिलापवाले तम्बू का द्वार" वह स्थान था जहाँ इस प्रकार की समस्याओं पर विचार किया जाता था। जब इस्राएली लोग इस देश में बस गए थे तब नगर के द्वार पर प्रधान इस प्रकार के न्यायालय संबंधी मामलों की सुनवाई किया करते थे (देखें रूत 4:1-12; नीति. 31:23)। इस देश में इन स्त्रियों को सर्वोच्च न्यायालय में अपनी समस्याएं प्रस्तुत करने का अधिकार प्राप्त था, जो इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि इस्राएल देश में स्त्रियों की गिनती महत्वपूर्ण लोगों में की जाती थी।

यह परमेश्वर के प्रकाशन के बारे में था। यह वृतांत इस बात का सुझाव प्रस्तुत करता है कि परमेश्वर ने अपनी विधि इस्राएलियों पर कैसे प्रकट की थी। सभी विधियां सीनै पहाड़ पर नहीं दी गई थी। बल्कि, जैसे यह मामला व्याख्या करता है कि जब मामला उठा और जिसका शोधन मूसा को दी गई विधि में नहीं था, परमेश्वर ने अतिरिक्त प्रकाशन देकर उन मामलों को सुलझा दिया था (देखें लैव्य. 24:10-23; गिनती 9:1-14; 15:32-36)। ये विधियां आने वाली भावी पीढ़ियों के लिए वैधानिक दृष्टांत ठहरी।[11]

यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास के बारे में था। पुत्रियों के निवेदन में यह छायांकन पाया जाता है कि परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किए गए देश को इस्राएली लोग एक दिन जीतेंगे, उसको अपने अधिकार में कर लेंगे और आपस में बांट लेंगे। उनका विश्वास इस तथ्य को स्थापित करता है कि अनुमान के अनुसार लगभग चालीस वर्ष पूर्व कादेश में, उनके पूर्वजों के विश्वास की कमी से उनका विश्वास बिल्कुल भिन्न था।

समाप्ति नोट

[1]टी. कार्सन, "गिनती," *द न्यू लेमेंस बाइबल कमेंट्री इन वन वोल्यूम*, सम्पादक जी. सी. डी. हॉली, एफ. एफ. ब्रूस, और एच. एल. इलीसन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉन्डरवैन, 1979), 275. [2]दूसरी गिनती के संबंध में भूमि की बंटवारे को अध्याय 26 में वर्णित किया गया था। [3]कैथरीन क्लार्क क्रोएगर और मेरी जे. ईवान्स, एड, *दि आईवीपी वीमेंस बाइबल कमेंट्री* (डॉनर्स ग्रूव, इलिनोय: इन्टरवार्सिटी प्रेस, 2002), 81. [4]हेनरी स्नाइडर गेहमैन, एड, "नेबो," *द न्यू वेस्टमिंस्टर डिक्शनरी आफ द बाइबल* (फिलाडेलफियाः वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1970), 655. [5]टिमोथी आर. एशली, *द बुक ऑफ़ गिनती,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 551. [6]रोनॉल्ड बी. एल्लन, "गिनती," *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती*, संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 946. [7]कॉय रॉपर, *निर्गमन*, ट्रूथ फॉर टूडे कमेंट्री (सीर्सी, आर्कांससः रेसॉर्स पब्लिकेशंस, 2008), 462. [8]आर. के. हैरीसन, *नम्बर्सः एन एक्जेजेटीकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः बेकर बुक हाऊस, 1992), 359. [9]दहेज देने की प्रथा के लिए देखें उत्पत्ति 29:24, 29; न्यायियों 1:13-15; और 1 राजा 9:16. [10]उदाहरण के लिए नीतिवचन 31 की "आदर्श पत्नी" "खेत के विषय में सोच विचार करती है और उसे मोल ले लेती है" (नीति. 31:16)।

[11]गॉर्डन जे. वेनहैम, गिनती, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 192.